आधी आबादी

संस्करण – रविवार, 14 मई 2023, अंक – 01

हर सन्डे, वूमेन्स डे

मणिपुर हिंसा ने बढ़ाई 'आधी आबादी' की मुश्किल

किसी भी हिंसा में सबसे ज्यादा भुगतती हैं महिलायें। बच्चों और बुज़ुर्गों के साथ घर से बेघर हुए इन महिलाओं के दर्द को कोई नहीं समझ सकता।

मणिपुर में हुई हिंसा में अब तक साठ से ज़्यादा लोगों की मौत चुकी है और हज़ारों लोग बेघर हो गए हैं। राज्य के प्रभावशाली मैतेई समुदाय को अनुसूचित जनजाति का दर्जा देने की माँग को इस हिंसा की मुख्य वजह माना जा रहा है। मैतेई समुदाय को अनुसूचित जनजाति का दर्जा देने की बात का विरोध मणिपुर के पहाड़ी इलाक़ों में रहने वाली जनजातियों के लोग कर रहे हैं। इनमें मुख्यतः कुकी जनजाति के लोग हैं। जनजातीय लोगों का कहना है कि मैतेई समुदाय पहले से ही साधन-संपन्न और प्रभावशाली है और अगर उन्हें जनजाति का दर्जा दे दिया गया तो न सिर्फ़ जनजातियों को मिल रहे आरक्षण के फ़ायदे कम हो जाएँगे बल्कि जनजातीय लोगों की ज़मीनों पर भी धीरे-धीरे मैतेई समुदाय का क़ब्ज़ा हो जाएगा। इसी बात को लेकर सुलग रहा विवाद तीन मई को हिंसक झड़पों में तब्दील हो गया था जब चुराचाँदपुर में मैतेई समुदाय को जनजाति का दर्जा देने की बात का विरोध करने के लिए एक पदयात्रा निकाली जा रही थी। मणिपुर के पहाड़ी इलाक़ों में कुकी जनजाति के लोग ज़्यादा हैं और मैतेई समुदाय के लोग कम संख्या में रहते हैं। इसी तरह इंफ़ाल घाटी में मैतेई समुदाय के लोगों की संख्या कुकी समुदाय के लोगों से कई गुना ज़्यादा है। बहुत से इलाक़े ऐसे भी हैं जहां कुकी और मैतेई समुदायों के लोगों के गाँव एक दूसरे से कुछ ही दूरी पर स्थित हैं। हिंसा शुरू होते ही राज्य के अलग-अलग इलाक़ों में जो भी समुदाय जिस जगह ज़्यादा संख्या में था उसने कम संख्या वाले समुदाय को निशाना बनाया। नतीजा ये हुआ कि मैतेई और कुकी दोनों ही समुदायों के सैंकड़ों घर जला कर राख कर दिए गए। हिंसा के बढ़ने के साथ ही मैतेई बहुल इलाक़ों से कुकी जनजाति के लोगों को और कुकी बहुल इलाक़ों से मैतेई समुदाय के लोगों को अपने घरों से भागना पड़ा। ऐसे में महिलाओं की स्तिथि का तो बस अंदाज़ा ही लगाया जा सकता है। बिगड़ती स्थिति को देखते हुए जब सेना और अर्ध-सैनिक बलों को राज्य में तैनात किया गया तो उन्होंने दोनों तरफ़ के हज़ारों लोगों को राहत शिविरों तक पहुँचाया। इनमें से ज्यादातर महिलायें और बच्चे हैं। अब इन हज़ारों लोगों को इनके घरों तक वापस पहुँचाना प्रशासन के सामने एक बड़ी चुनौती है। हर दिन राज्य के कई इलाक़ों में ऐसे दृश्य आम हो गये हैं जिनमें सैंकड़ों लोगों को गाड़ियों में ठूँस कर उनके घर भेजा जा रहा है।

जिस चुराचाँदपुर में इस हिंसा की शुरुआत हुई वहाँ अब भी तनाव का माहौल है। छब्बीस साल की चिन्लियाँमोई चुराचाँदपुर में हुई हिंसा की शिकार उस वक़्त हुईं जब एक गोली उनकी टांग में लग गई। वो कहती हैं, "मुझे पता नहीं है कि क्या हो रहा है लेकिन मणिपुर में हालात ठीक नहीं हैं। यहाँ हमें प्रवासी कहा जा रहा है जबकि हम प्रवासी नहीं हैं। हमारे पूर्वज यहाँ सालों से रहते आ रहे हैं। जनतियों के साथ हमेशा भेदभाव होता रहा है। अब बस ये बढ़ गया है।" चुराचाँदपुर के ज़िला अस्पताल में शवों का आना लगातार जारी है।

विशेष संपादकीय

गुड लक गर्ल्स

– *दिनेश के सिंह*

आधी आबादी मासिक पत्रिका को आप सभी पाठकों का प्यार मिलता रहा है। महिलाओं के हक़ और अधिकार की बात हम हमेशा ही करते रहे हैं और अब आधी आबादी वीकली के जरिए भी इस मुहिम को हम एक नये तेवर और प्रारूप में आगे बढ़ाने के लिए तैयार हैं। अब से पाठकों को हर रविवार आधी आबादी डिजिटल रूप में उपलब्ध कराने की पहल की गई है और हमें आशा है कि हमारी इस पहल को आप सब पहले की तरह ही अपना प्यार देंगे। आपका प्यार और भरोसा ही हमारी ताकत है।

अभी देश भर में आईपीएल यानी इंडियन प्रीमियर लीग क्रिकेट की धूम है और आज भी राजस्थान और बेंगलुरू के अलावा कोलकाता और चेन्नई के बीच जबरदस्त भिड़ंत होने जा रहा है। हम सब देख ही रहे हैं कि आईपीएल ने क्रिकेट को एक अलग ही आयाम देने का काम किया है और आज कई युवा खिलाड़ियों को इसके जरिए पहचान, प्रसिद्धि और पैसा मिल रहा है। आईपीएल की यह चर्चा इसलिए भी ज़रूरी है क्योंकि अभी तक इसमें सिर्फ़ पुरुष खिलाड़ी ही भाग ले सकते थे। लेकिन, इस साल पहली बार महिलाओं के लिए भी आईपीएल की शुरुआत हो गई है। इस पहल से न सिर्फ़ महिला क्रिकेट की दिशा और दशा बदलेगी बल्कि कई युवतियों को भी खेल के जरिए अपने सपनों को पंख देने का अवसर मिलेगा और ये लड़कियां अपने लिए नया आसमान तलाश सकेंगी। पहले महिला-पुरुष क्रिकेटरों के मैच फ़ीस में भी एक बड़ा अंतर था लेकिन अब बीसीसीआई ने एक ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए महिला-पुरुष क्रिकेटरों की फ़ीस समान कर दी है। अब दोनों ही खिलाड़ियों को टेस्ट के लिए 15 लाख, एक दिवसीय मैचों के लिए 6 लाख और 20-20 मुकाबलों के लिए तीन लाख दिए जायेंगे। क्रिकेट के बहाने ही सही महिला और पुरुषों के बीच यह समानता एक सुखद बदलाव है। जिस देश में क्रिकेट जुनून की हद तक देखा और खेला जाता हो उस देश में महिला-पुरुष क्रिकेट को एक पंक्ति में लाकर खड़ा कर देना उभरते भारत की एक बड़ी उपलब्धि है।

लेकिन, इस चमकीली ख़बर के बीच जंतर-मंतर दिल्ली में धरने पर बैठी महिला पहलवानों को भी हमें नहीं भूलना है। चाहे कोई भी क्षेत्र हो सरकार और समाज को सबसे पहले यह सुनिश्चित करना होगा कि महिलायें सुरक्षित हैं। उन्हें यह भरोसा देना होगा कि उनके साथ किसी भी तरह का शोषण या यौन-उत्पीड़न अब बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। महिला पहलवानों को न्याय मिले, सच सामने आए और दोषियों को सज़ा मिले यह कौन नहीं चाहता? इन सबके बीच जिस तरह से शनिवार को ख़बर आई है कि रेसलिंग फेडरेशन पर फिलहाल तत्काल प्रभाव से रोक लगा दिया गया है एक बड़े बदलाव के संकेत हैं।

बहरहाल, आधी आबादी वीकली का यह प्रवेशांक अब आपके हाथों में है। उम्मीद है हमारी यह पहल आपके जीवन में एक सकारात्मक बदलाव लेकर आयेगी। मैं अपने नियमित स्तम्भ के जरिए आपसे संवाद करता रहूँगा। आप मुझे सीधे मेल भी कर सकते हैं। हमारा मेल आईडी है- aadhiaabadisunday@gmail.com

जानकी बनकर मैं खुद को धन्य महसूस कर रही हूँ: कृति सनोन

प्रतिभाशाली और खूबसूरत अभिनेत्री कृति सनोन अपनी आने वाली फ़िल्म 'आदिपुरुष' को लेकर चर्चा में हैं। यह फ़िल्म 16 जून को रिलीज़ हो रही है। फ़िल्म के साथ कुछ विवाद भी हुआ था लेकिन अब इसे सुलझा लिया गया है। इस फ़िल्म में प्रभास राघव (श्री राम) की भूमिका में हैं तो कृति जानकी यानी माँ सीता का किरदार निभा रही हैं। वो इस फ़िल्म में अपने किरदार से काफी खुश हैं। इसी संबंध में कृति सनोन ने आधी आबादी टीम से बातचीत भी की है। प्रस्तुत हैं बातचीत के अंश:

सवाल: 'आदिपुरुष' का ट्रेलर काफी पसंद किया जा रहा है। लॉन्च पर आप भावुक भी नज़र आईं?

कृति: मैं अभी भी बहुत इमोशनल महसूस कर हूँ और अपने प्रशंसकों के साथ ट्रेलर देखकर तो मेरे रोंगटे खड़े हो गए थे। यह मेरे लिए सिर्फ़ एक फ़िल्म नहीं है, बल्कि इससे कहीं अधिक है। भूमिका के मैं ओम को धन्यवाद देना चाहती हूँ कि उन्होंने मुझपर भरोसा किया

शेष पृष्ठ 3 पर....

हलचल

दलित महिला सामूहिक दुष्कर्म मामला दबाने की कोशिश कर रहे हैं केजरीवाल: भाजपा

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने बीते सप्ताह मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को एक पत्र लिखकर जीबी पंत अस्पताल में एक दलित महिला के साथ सामूहिक दुष्कर्म के मामले को दबाने की कथित कोशिश पर नाराजगी व्यक्त की।

सचदेवा ने पीड़िता के परिवार को एक करोड़ रुपये का मुआवजा देने और उसके एक रिश्तेदार को सरकारी नौकरी देने की मांग की। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष ने कहा कि अफसोस की बात है कि देश के किसी कोने में महिलाओं से जुड़ी घटना होने पर बयानबाजी करने वाले अरविंद केजरीवाल आज दिल्ली सरकार के अस्पताल परिसर में दलित महिला से सामूहिक बलात्कार पर खामोश हैं।

केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने की 'पोषण भी पढ़ाई भी' प्रोग्राम की शुरुआत

केंद्रीय बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी पोषण भी पढ़ाई भी प्रोग्राम की शुरुआत की। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मद्देनजर अब 3 से 6 साल तक के बच्चों को अब पोषण के साथ-साथ पढ़ाई भी कराई जाएगी। इस मौके पर 7000 माता पिता और 10,000 से ज्यादा गार्डियन मौजूद थे। वहीं, 1 लाख से ज्यादा Community से जुड़े लोग थे। 600 करोड़ रूपए सिर्फ आंगनवाड़ी वर्कर्स के लिए प्रस्तावित है जिससे आँगनवड़ी वर्कर्स को ट्रेन किया जायेगा।

बागेश्वर बाबा से मिलने पहुंची मुस्लिम महिला, कह दी बड़ी बात

बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र शास्त्री पटना में हैं। नौबतपुर के तरेत में हनुमंत कथा का कार्यक्रम है। पांच दिनों तक बाबा का दिव्य दरबार सजेगा। श्रद्धालुओं और समर्थकों ने पटना एयरपोर्ट पर भव्य स्वागत किया। पनाश होटल में वो कुछ देर के लिए रूके हुए हैं। एयरपोर्ट से होटल तक सुरक्षा के चाक-चौबंद इंतजाम किए गए हैं। इसी बीच बुर्का पहने एक महिला बाबा बागेश्वर से मिलने पहुंच गई। बाबा बागेश्वर से मिलने पहुंची मुस्लिम महिला से पत्रकारों ने पूछा कि बाबा से मुलाकात क्यों करना चाहती हैं? इसके जवाब में महिला ने कहा कि अपना कष्ट दूर करने के लिए उनसे मिलने आई हूँ। फिर महिला से सवाल किया गया कि बाबा हिंदू-हिंदू की बात करते हैं? इसके जवाब में महिला ने कहा कि कोई बात नहीं।

बाबा चमत्कारी है। ये बिना बताए ही समस्या को जान लेते हैं और उसका समाधान भी करते हैं। हमारे धर्म में जितने भी इस टाइप के लोग हैं, सभी ठग हैं। ये लोग बस ठगने का काम करते हैं और गलत काम करते हैं।'

नीट परीक्षा में लड़कियों की अंडरगारमेंट की तलाशी, महिला आयोग ने दिए जांच के आदेश

महाराष्ट्र के सांगली जिले में बेहद ही शर्मनाक मामला सामने आया है। पिछले रविवार को हुई नीट परीक्षा के दौरान जिले के एक एग्जामिनेशन सेंटर में परीक्षा देने आई लड़कियों के अंडरगारमेंट की तलाशी ली गई। इतना ही नहीं ब्रा के अंदर भी हाथ डालकर ली गयी तलाशी। लड़कियों से अंडरगारमेंट भी निकलवाए गए। टाइम्स ऑफ़ इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार महाराष्ट्र के सांगली के अलावा चंडीगढ़ और पश्चिम बंगाल में भी इस तरह घटना सामने आयी है। इस घटना की जानकारी मिलने पर पेरेंट्स ने कड़ा विरोध जताते हुए इसकी शिकायत की है। इस घटना के बाद पूरे राज्य में लोगों के बीच काफी गुस्सा है। राज्य महिला आयोग ने मामले को गंभीरता से लेते हुए राज्य के चिकित्सा शिक्षा निदेशक को इस संबंध में रिपोर्ट देने का निर्देश दिया है।

सीबीएसई 10वीं के बोर्ड रिजल्ट जारी

सीबीएसई बोर्ड परीक्षाओं के रिजल्ट का इंतजार खत्म हो गया है। सीबीएसई ने शुक्रवार को कक्षा 10वीं के बोर्ड रिजल्ट जारी कर दिए गए हैं। इस बार कुल 93.12% स्टूडेंट्स कक्षा 10वीं की परीक्षा में पास हुए हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने सभी छात्रों को बधाई देते हुए सुनहरे भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दी हैं। इस साल विशेष बात यह है कि बोर्ड रिजल्ट के साथ टॉपर्स की घोषणा नहीं करेगा। बोर्ड से सभी स्कूलों को भी निर्देश दिए हैं कि वे अपने स्कूल के टॉपर्स डिक्लेयर न करें। रिजल्ट में केवल स्टूडेंट्स के पास प्रतिशत की जानकारी दी गई है। क्योंकि ऐसा करने से छात्रों में एक बेवजह की हीनभावना आ सकती है। हालांकि, इस बार भी देश के अलग-अलग हिस्से से छात्रों के सुसाइड की ख़बर भी आई। ये छात्र कम नंबर आने से दुखी थे।

कर्नाटक में नहीं चला मोदी का जादू

▪ हीरेंद्र झा

हिमाचल प्रदेश के बाद कर्नाटक में भी भाजपा को बड़ा झटका लगा है। पिछले एक साल के अंदर ये दूसरा राज्य है, जिसकी सत्ता भाजपा के हाथ से कांग्रेस ने छीन ली। इसका बड़ा सियाासी मतलब निकाला जा रहा है। खासतौर पर भाजपा के लिए बड़ी चिंता की बात है। जिस तरह से बजरंगबली को चुनावी मुद्दा बनाते हुए दोनों पार्टी ने राजनीति की है यह भी एक नये तरह की राजनीति की शुरुआत है। बड़ा सवाल है कि क्या मोदी का जादू खत्म हो गया है। वरिष्ठ पत्रकार ओम थानवी फ़ेसबुक पर लिखते हैं- "प्रधानमंत्री का अपना राजधर्म छोड़ एक प्रदेश के चुनाव में ताबड़तोड़ दौरे, अनवरत रोड-शो, मोदी-मोदी के समवेत, फूलों के पहाड़, केरला (स्टोरी) की क़िस्सागोई, 91 गालियों का विक्टिम-कार्ड, देश के एक और विभाजन का भयादोहन, मतदान के दिन दूसरे प्रदेश पहुँचकर विपक्ष पर फिर हमला — कुछ काम न आया। क्या नमो-नमो का "करिश्मा" बुझने लगा है? चुनाव में बजरंगबली को खींच लाए। उन्होंने जलवा दिखा दिया। आगे क्या है, (श्री)राम की लीला?"

राजनीतिक समीक्षकों की माने तो भ्रष्टाचार और भाजपा की भीतरी कलह इस हार की बड़ी वजह है, जिसे पीएम मोदी भी नहीं बचा सके। इस तरह से कांग्रेस इस बार न सिर्फ सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी बल्कि बहुमत के आँकड़े से भी आगे निकल गई। प्रियंका गांधी ने जीत के बाद कहा कि- जो राजनीति जनता के मुद्दों को भटकाने का काम करती है और जनता की बातों पर ध्यान नहीं देती है, वो राजनीति अब इस देश में नहीं चलेगी। हिमाचल में भी हमने ये देखा और कर्नाटक में भी यही देखा। जनता चाहती है कि उनके अपने जो मुद्दें हैं, उनपर चर्चा हो और अपनी जो समस्याएं हैं, उनका समाधान हो। कर्नाटक विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को मिले स्पष्ट बहुमत पर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भी पार्टी को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि मैं कर्नाटक की जनता, मतदाताओं को सैल्यूट करती

हूं और कांग्रेस पार्टी को जीत की बधाई देती हूँ। उन्होंने आगे कहा कि अहंकार, दुर्व्यवहार, एजेंसी पॉलिटिक्स के खिलाफ लोगों ने वोट टू नो बीजेपी आह्वान किया। अब छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश के चुनाव हैं यहां भी भाजपा को शिकस्त मिलेगी।

इस साल कर्नाटक के बाद अब पांच अन्य राज्यों में चुनाव होने हैं। इनमें राजस्थान, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, मिजोरम और तेलंगाना शामिल है। इसके अलावा अगले साल यानी 2024 में लोकसभा चुनाव होने हैं। इसके बाद सात राज्यों में चुनाव होने हैं। कुल मिलाकर अगले दो सालों में लोकसभा के साथ-साथ 13 बड़े राज्यों के चुनाव होने हैं। इनमें कई दक्षिण के राज्य भी हैं। इसलिए भाजपा के लिए कर्नाटक की हार को बड़ा झटका माना जा रहा है। वहीं, मुश्किलों में घिरी कांग्रेस के लिए जीवनदान साबित हुई।

महिला पहलवानों की शिकायत का ब्यौरा सुनकर हिल जायेंगे आप!

▪ आधी आबादी डेस्क

द इंडियन एक्सप्रेस ने अपनी एक रिपोर्ट में भारतीय कुश्ती संघ (डब्ल्यूएफ़आई) के अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह पर लगे यौन उत्पीड़न के आरोपों का ब्यौरा प्रकाशित किया है। रिपोर्ट के मुताबिक बृजभूषण शरण सिंह पर आरोप लगाने वाली सात में से दो महिला पहलवानों ने पुलिस को दी शिकायत में कई बार यौन उत्पीड़न किए जाने का ज़िक्र किया है। अख़बार की रिपोर्ट के मुताबिक ये शिकायतें 21 अप्रैल को दिल्ली के कनॉट प्लेस थाने में दी गईं थीं और इनमें कम से कम आठ घटनाओं का ज़िक्र है। दोनों शिकायतकर्ताओं ने दावा किया है कि बृजभूषण शरण सिंह ने उनकी सांस जांचने के बहाने उन्हें ग़लत तरीक़े से छुआ और यौन उत्पीड़न किया।

अपनी शिकायत में इन महिला पहलवानों ने कहा है कि कुश्ती संघ के अध्यक्ष के रूप में सिंह के प्रभाव और इससे करियर पर पड़ सकने वाले नकारात्मक असर की वजह से महिला पहलवानों ने इस यौन उत्पीड़न के बारे में पहले बात नहीं की। शिकायतकर्ताओं का कहना है कि इन घटनाओं की वजह से उनका शारीरिक और मानसिक शोषण हुआ। अपनी शिकायत में एक महिला पहलवान ने सिंह पर कम से कम पांच अलग-अलग घटनाओं के दौरान यौन उत्पीड़न के आरोप लगाए हैं। एक घटना, 2016 के एक टूर्नामेंट के दौरान की है जब एक रेस्त्रां में कथित रूप से बृजभूषण शरण सिंह ने महिला पहलवान को अपने पास बुलाकर ग़लत तरीक़े से उसकी छाती और पेट को छुआ। अपनी शिकायत में महिला पहलवान ने कहा है कि इस घटना के बाद वो खाना तक नहीं खा पाई थीं और उसकी नींद ख़राब हो गई थी जिसकी वजह से वो अवसाद में चली गईं। इस महिला पहलवान का आरोप है कि साल 2019 में एक अन्य टूर्नामेंट के दौरान बृजभूषण शरण सिंह ने फिर से इसी तरह उसकी छाती और पेट को छुआ। महिला पहलवान का आरोप है कि सिंह ने 21 अशोक रोड स्थित अपने बंगले में भी उसे ग़लत तरीक़े से छुआ। बृजभूषण शरण सिंह के इसी संसदीय निवास में भारतीय कुश्ती संघ का दफ़्तर भी है। महिला पहलवान ने आरोप लगाया है कि पहले दिन सिंह ने उसकी जांघों और कंधों को छुआ और दूसरे दिन उसकी छाती और पेट को ये कहते हुए ग़लत तरीक़े से छुआ कि वह उसकी सांस की जांच कर रहे हैं। महिला पहलवान ने आरोप लगाया है कि साल 2018 में सिंह ने उन्हें देर तक कस कर गले लगाया और एक बार महिला पहलवान को सिंह को झटककर अलग करना पड़ा क्योंकि उनका हाथ उसकी छाती के क़रीब था। दूसरी महिला पहलवान ने भी बृजभूषण शरण सिंह पर इसी तरह के आरोप लगाये हैं। दूसरी शिकायतकर्ता का आरोप है कि साल 2018 में जब वो अभ्यास कर रहीं थीं, तब सिंह ने उनकी ट्रेनिंग जर्सी को ऊपर उठाकर उनके पेट और सीने को यह कहते हुए छुआ कि वह उसकी सांस की जांच कर रहे हैं। शिकायतकर्ता ने कहा है कि इस घटना से वो बहुत हैरान और परेशान थी। शिकायतकर्ता का आरोप है कि इस घटना के क़रीब एक साल बाद जब वो भारतीय कुश्ती संघ के दफ़्तर गईं थीं तब बृजभूषण शरण सिंह ने बाकी लोगों को बाहर भेज दिया और उसे ज़बरदस्ती पकड़ने की कोशिश की। महिला पहलवान का आरोप है कि सिंह ने उनसे व्यक्तिगत फ़ोन नंबर भी मांगा और अपना नंबर दिया। इंडियन एक्सप्रेस के मुताबिक इन दोनों महिला पहलवानों ने इसी सप्ताह सीआरपीसी की धारा 161 के तहत दिल्ली पुलिस को अपने बयान दर्ज करवाए हैं। भारत के कई शीर्ष पदक विजेता पहलवान पिछले दो सप्ताह से बृजभूषण शरण सिंह के ख़िलाफ़ दिल्ली के जंतर-मंतर पर धरना दे रहे हैं। दिल्ली पुलिस ने बृजभूषण के ख़िलाफ़ दो एफ़आईआर दर्ज की हैं। हालांकि अभी तक उन्हें गिरफ़्तार नहीं किया गया है। बृजभूषण शरण सिंह ने अपने ऊपर लगे सभी आरोपों को सिरे से ख़ारिज किया है।

राघव की हुई परिणीति

बॉलीवुड एक्ट्रेस परिणीति चोपड़ा ने शनिवार (13 मई) को आप नेता राघव चड्ढा के साथ सगाई कर ली है। कई दिनों से इस जोड़ी की डेटिंग की ख़बरें आ रहीं थी। सगाई समारोह में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा समेत कई मेहमान शामिल हुए।

झारखंड में, महिला वन संरक्षकों का साहस, जंगल माफ़िया से टक्कर

> झारखंड में कुछ महिलाएँ अपनी एकजुटता के बूते पर, जंगल माफ़िया को टक्कर दे रही हैं और स्थानीय वनों के संरक्षण प्रयासों में लगी हैं।

जमुना टुडू झारखंड में, पिछले 25 सालों से जंगल माफ़िया से लोहा ले रही हैं। 42 वर्षीय जमुना ने 10 हज़ार महिलाओं की एक सेना बनाई है, जो बाँस की छड़ें, भाले और धनुष-बाण रखते हैं, और जंगलों में गश्त करती हैं। स्थानीय लोग, प्यार से उन्हें 'लेडी टार्ज़न' बुलाते हैं।

2019 में, भारत सरकार ने उन्हें अभूतपूर्व कार्यों के लिए, देश के चौथे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्मश्री से सम्मानित किया।

"बचपन में हम अपने पिता के खेत में मदद करने के लिए जाते थे। पौधों को बढ़ते हुए देखकर मुझे बहुत अच्छा लगता था और जानवरों के साथ खेलना पसन्द था। प्रकृति हमारे जीवन का अभिन्न अंग थी।" उनका कहना है कि वो जब विवाह के बाद ओडिशा से 100 किलोमीटर दूर झारखंड के मुतुरखम आईं, तो बड़े पैमाने पर वनों की कटाई देखकर हैरान रह गईं। शादी के अगले दिन उनके ससुराल वाले उन्हें घर के पीछे का जंगल दिखाने ले गए।

उन्होंने ख़ुद को पेड़ों के ठूंठों से घिरा हुआ पाया। तभी उन्होंने निश्चय कर लिया कि इस बारे में वो कुछ करके रहेंगी। फिर जमना टुडू और चार अन्य महिलाओं ने, अवैध रूप से साल व सागौन के पेड़ों की कटाई करने वाले लकड़ी माफ़िया का सामना करने की ठान ली।

वो बताती हैं, "अनेक ग्रामीणों ने मेरी चिन्ता को लेकर हामी भरी, लेकिन बहुत कम लोग ही हमारा समर्थन करने के लिए आगे आए। फिर पाँचों महिलाओं ने मिलकर 1998 में वन सुरक्षा समिति (फॉरेस्ट प्रोटेक्शन काउंसिल) बनाई। वे निगरानी रखने के लिए जंगल में जाकर, जंगल माफ़िया को खुली चुनौती देने लगे। जवाब में माफ़िया ने शारीरिक हिंसा और मौत की धमकियों का सहारा लिया, लेकिन माफ़िया, महिलाओं के जज़्बे को रोक नहीं पाए।

जमुना टुडू कहती हैं, "धीरे-धीरे समुदाय के अन्य सदस्य भी आगे आने लगे।" तब से आज तक, उन्होंने ऐसी 400 से अधिक वन सुरक्षा परिषदों के गठन व उन्हें पुख़्ता करने में मदद की है।

ये महिलाएँ, गश्त लगाने के अलावा, क्षरण हुए वन क्षेत्रों को बहाल करने के लिए, रात में भी वृक्षारोपण अभियान चलाते हैं। परिषदें, महिलाओं को दमनकारी सामाजिक रूढ़िवादिता से मुक्त कराने का भी एक साधन बन गई हैं।

जमुना टुडू का मानना है, "अगर महिलाएँ जाग उठेंगी तो पूरा गाँव जागरूक हो जाएगा।"

वो महिलाओं को, मुतुरखम में लड़की पैदा होने पर 18 और महिलाओं की शादी होने पर 10 पेड़ लगाने के लिए प्रेरित करती हैं। अपने पिता से सीखा प्रकृति प्रेम और सम्मान ही वो भाव है, जो उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। वह कहती हैं, "आज भी मैं जंगल जाने का समय निकाल लेती हूँ... मेरा मानना है कि चूँकि प्रकृति से हम सभी को किसी न किसी रूप में लाभ होता है, इसलिए हम सबकी ज़िम्मेदारी बनती है कि हम अपनी क्षमतानुसार कार्रवाई करें।"

जानकी बनकर मैं ख़ुद को धन्य महसूस....

.... पृष्ठ 1 से जारी

कि मैं जानकी का किरदार निभा सकती हूँ। बहुत कम अभिनेताओं को अपने जीवन में ऐसा अवसर मिलता है। मैं बहुत, बहुत धन्य महसूस कर रही हूँ।

सवाल: फ़िल्म को लेकर काफी बवाल भी हुआ?

कृति: ये सब सुनकर अच्छा तो नहीं लगता है। इस पर मैं चुप ही रहूँ तो अच्छा! इतना जरूर कहूँगी कि यह फ़िल्म दर्शकों को बहुत पसंद आएगी।

सवाल: प्रभास कैसे को स्टार हैं?

कृति: बहुत मेहनत करते हैं और उनकी फैन फॉलोविंग भी जबरदस्त है। उनके साथ काम करना एक अच्छा अनुभव रहा और ओम ने जिस तरह से यह फ़िल्म बनाई है वो भी कमाल है।

सवाल: इंडस्ट्री में कभी एक स्त्री होने के नाते भेदभाव महसूस किया है आपने?

कृति: ये भेदभाव तो हर जगह आप महसूस कर सकते हैं। मेरे साथ भी ऐसा हुआ है। लेकिन, सबसे महत्वपूर्ण यही है कि सभी चुनौतियों के बीच सही लोगों तक पहुँचना जो आपकी कद्र करें, आपकी काम की कद्र करें। मैं खुशकिस्मत रही हूँ कि मुझे ऐसे अच्छे लोग मिले।

सवाल: रिलेशनशिप को लेकर क्या सोचती हैं?

कृति: मेरी लव लाइफ रही है और मैं प्यार में अंधी हो जाती हूँ। मैं ऐसा मानती हूँ कि अगला व्यक्ति अगर आपको अहमियत और रेसपेक्ट नहीं दे रहा है तो उससे दूर होना ही बेहतर होता है। ऐसे में मैं सोचती हूं कि यह काम पर ध्यान देने का समय है।

(कृति सनोन से यह बातचीत निमिषा दीक्षित ने की है)

‘द केरला स्टोरी’: प्रोपेगेंडा फिल्म नहीं, यूट्यूबर फैला रहा है?

▪ नीरज बधवार

‘द केरला स्टोरी’ को प्रोपेगेंडा फिल्म बताने वाले यूट्यूबर का अभी एक वीडियो देखा। बहुत सारे लोग ये कहकर वीडियो शेयर कर रहे हैं कि इससे दूध का दूध और पानी का पानी हो गया है। मगर मुझे ऐसा नहीं लगता। सच तो ये है कि ये वीडियो बड़ी चालाकी से एक बड़ी समस्या को प्रोपेगेंडा बताने की साज़िश कर रहा है। यूं तो किसी और की बात पर अपने तर्क देना वक्त और प्रतिभा की बर्बादी है मगर कभी-कभी बौद्धिक आतंकवाद से निपटने के लिए इस तरह के प्रयास करने भी पड़ते हैं इसलिए थोड़ी ऊर्जा खपानी पड़ रही है।

अपने वीडियो में यूट्यूबर का सारा ज़ोर इस बात पर है कि फिल्म के ट्रेलर में इसे 32000 लड़कियों की कहानी बताया गया मगर ये तो 3 ही लड़कियों की कहानी है। मेरा मानना है कि ये फिल्म 3 या 6 लड़कियों की कहानी नहीं, बल्कि राज्य में हजारों की तादाद में हो रहे कन्वर्ज़न की कहानी भी है और हज़ारों की तादाद में हो रहे उन कंवर्जन की वजह से ही इन 3 या इन जैसी बाकी लड़कियों की कहानी भी महत्वपूर्ण हो जाती है जो लव जिहाद के नाम पर आईएस में शामिल होने देश से बाहर भेज दी गईं।

इससे पहले कि मैं कन्वर्ज़न के असल मुद्दे पर आऊं हम 3 या 32 की इस बहस को भी देख लेते हैं। मैं पूछता हूं कि जब बीफ मामले में अखलाक की दुखद मौत को पूरे देश में मुसलमानों पर हो रहे अत्याचार बताया गया। जब कठुआ में मुस्लिम बच्ची से हुए रेप के बाद पूरे हिंदू धर्म को रेपिस्ट बताया गया। उससे जुड़े हज़ारों कार्टून शेयर किए गए, क्या तब ये सवाल पूछा गया कि कि भाई एक-आध मामले के आधार पर आप पूरी हिंदू कम्युनिटी को कैसे टारगेट कर सकते हैं। इसके अलावा जब-तब इंटोलेरेन्स के सच्चे झूठे मामले सामने आए आपने उन मामलों को आगे रखकर इस देश में एक पूरी की पूरी कौम को ही पीड़ित बताने की कोशिश की। तब किसी ने सवाल नहीं किया कि भाई इतने बड़े देश में जहां एक कौम की करोड़ों की आबादी है। वहां आप 2-4, 5-10 मामलों को आगे रखकर एक नेरेटिव कैसे सेट कर सकते हैं। और अगर उन सब मामलों पर नैरेटिव सेट किया जा सकता है तो फिर 4-5 लड़कियों की इस खौफनाक कहानी के ज़रिए मज़हबी कट्टरपंथियों द्वारा चलाए जा रहे किसी रैकेट का भंडाफोड़ क्यों नहीं हो सकता? क्या ऐसा करने पर यूएन ने रोक लगा रखी है?

यूट्यूबर खुद वीडियो में हज़ारों की तादाद में हो रहे कन्वर्ज़न की बात करता है मगर ये भी कहता है कि ये Forced कन्वर्जन थोड़ा ही है। भाई मसला Forced या Unforced Conversion का है ही नहीं, मसला कन्वर्ज़न का है। एक कौम जहां खुद अपना मज़हब छोड़ देने पर मौत की सज़ा है। जब वो खुद धर्म छोड़ देने को इतना बड़ा अपराध मानती है तो वो किस हक से, किस नेक मकसद के चलते दूसरों से उनका धर्म छुड़वा रही है। दूसरों से उनका धर्म छुड़वाकर उन्हें जैसे-तैसे अपने धर्म में शामिल करना ये बताता है कि आप धार्मिक श्रेष्ठता बोध से ग्रसित हैं। और आज सारी लड़ाई इसी धार्मिक श्रेष्ठता बोध की है। और कोई भी कौम अगर इसी तरह की Religious Superiority की शिकार है तो उसकी तो वैसे भी किसी Secular Values में कोई आस्था नहीं हो सकती। तो फिर ये गंगा-जमना संस्कृति और भाईयों की तरह साथ रहने के नारे कहां से आ गए। इनके क्या मायने रह गए।

आप कहते हैं कि जी, इस तरह के कंवर्ज़न तो प्यार के नाम पर हो रहे हैं। मगर ये कौनसा प्यार है भाई, जहा कौम से सिर्फ लड़के ही दूसरे धर्म की लड़कियों से प्यार करने निकल रहे हैं। प्यार एक सहज चीज़ है। लड़के-लड़कियों दोनों को हो सकता है। मगर एक तरफ से सिर्फ लड़के ही ऐसा प्यार करने निकले हैं और प्यार के बाद शादी के नाम पर कन्वर्ज़न भी कर रहे हैं तो बाबू मोशाय ये प्यार नहीं मज़हबी मिशन है।

अगर प्यार सहज है तो फिर ये सहजता एक कौम की लड़कियों को उपलब्ध क्यों नहीं। और अगर शादी के लिए लड़की का मज़हब बदलना इतना ही ज़रूरी है तो फिर ऐसा कैसे है कि आपकी तरफ की लड़की को प्यार हो जाए तो भी शादी के लिए लड़का ही अपना धर्म बदले! मध्यप्रदेश में रिवर्स लव जिहाद के ऐसे कितने मामले आए जहां एक मज़हब की लड़की से शादी करने के लिए लड़कों के धर्म बदलवाए गए और बाद में खुलासा हुआ कि ये सब लव जिहाद के अंतर्गत ही था।

यूट्यबूर वीडियो में कहता है कि Forced Conversion कोई कैसे कर सकता है। वो लड़कियां क्या इतनी बेवकूफ हैं। उनमें खुद की अक्ल नहीं है क्या। बहुत बढ़िया किया आपने ये खुद की अक्ल वाली बात बोलकर। वही सवाल आपसे पूछा जा सकता है कि ये हर दिन जो लाखों की तादाद में जनता फिल्म देखने जा रही है क्या इसमें अक्ल नहीं है? क्या ये भी प्रोपेगेंडा की शिकार है? क्या इसे कोई भी बेवकूफ बना सकता है? मैं हमेशा कहता हूं। फिर दोहराता हूं। आप धर्म के नाम पर झूठी बात बोलकर किसी को बरगला ही नहीं सकते। कोई भी इंसान किसी भी दावे को, तर्क को तभी ग्रहण करता है जब उसके पास उससे जुड़ा First Hand Experience न हो। जो भी लोग कट्टरता की इन बातों को सच मानकर फिल्म देख रहे हैं। देखने के बाद उसे और सच्चा मानते हैं तो सिर्फ इसलिए क्योंकि उनके पास खुद इससे जुड़े अनुभव हैं। वो अनुभव जो उन्होंने समाज में रहते हुए हासिल किए हैं। अब आपके हिसाब से कन्वर्ट होने वाली लड़कियां तो बेवकूफ नहीं हो सकती लेकिन लाखों लोग जो इस तरह के तजुर्बे लेकर बैठे हैं वो मूर्ख हैं,तो बताने की ज़रूरत नहीं है कि असल मूर्ख कौन है।

इसी तरह की सोच रखने वाले लोगों को कश्मीर फाइल्स भी प्रोपेगेंडा लगी थी। फिल्म देखकर देश-विदेश में आंसू बहाने वाले हज़ारों कश्मीर पंडित भी झूठे लगे थे। इनके हिसाब से 30 साल पहले लाखों की तादाद में कश्मीरी पंडित अपना घर छोड़कर सिर्फ इसलिए निकल गए ताकि 2022 में उन पर कोई प्रोपेगेंडा फिल्म बनाकर एक कौम को बदनाम कर सके? क्या वो सब लोग भी एक पार्टी के एजेंट थे? कब तक यूं डिनायल मोड़ में जीते रहोगे भाई।

यूट्यूबर ने आंकड़ों का ज़िक्र करते हुए बड़ी चालाकी से एक दो स्टेटमेंट पढ़कर मामला रफा दफा कर दिया। मगर उसने ये नहीं बताया कि किस तरह 2021 में केरल के प्रमुख कैथोलिक बिशप Joseph Kallarangatt ने कहा था कि अगर कोई इंसान कहता है कि केरल में लव जेहाद जैसी कोई चीज़ नहीं है तो वो सच्चाई से मुंह मोड़ रहा है। बिशप ने बताया था कि किस तरह केरल में लव जिहाद और नारकोटिक्स जिहाद के नाम पर गैर मुस्लिम युवाओं का टारगेट किया जा रहा है।

2015 में केरल की कैथोलिक बिशप काउंसिल के मुखपत्र Jagrath में छपी रिपोर्ट में बताया गया कि किस तरह 2005 से 2012 के बीच 4 हज़ार क्रिश्चियन लड़कियों को कन्वर्ट किया गया।

खुद केरल एसटीएफ ने हज़ारों हिंदू और क्रिश्चियन लड़कियों के कन्वर्ज़न के आंकड़े पेश किए। केरल हाईकोर्ट ने शादी के नाम पर रहे कन्वर्ज़न में एक खास पैटर्न की तरफ इशारा किया। और तो और केरल में मौजूद दुनिया की दूसरे सबसे बड़ी सिरो मालाबार चर्च, जी हां दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी कैथोलिक चर्च ने क्रिश्चियन लड़कियों के कन्वर्जन पर अपनी चिंता जताई थी।

अब या तो यूट्यूबर को ये आंकड़े मिले नहीं या वो बड़ी चालाकी से इसे इग्नोर कर गया। उसी तरह जैसे वो ये भी इग्नोर कर गया कि फिल्म के जिस मुख्य किरदार ने लड़की को लव जिहाद के मामले में फंसाया था फिल्म के आखिर में लिखा आया था कि वो आज भी केरल में पित्ज़ा शॉप चला रहा है। तर्क तो ये भी दिया जा सकता है कि जिस इंसान का अपराध इतना बड़ा था कि उस पर फिल्म बन गई जब वो आज भी केरल में खुलेआम घूम रहा है, अपना काम धंधा चला रहा है तो कन्वर्ज़न के लव जिहाद के बाकी मामलों में पुलिस किसी की क्या ही सुनवाई कर रही होगी? और जब सुनवाई ही नहीं हो रही तो ये आंकड़ा 3 या 32 हज़ार ये कौन तय करेगा?

देने के लिए और हज़ारों तर्क हैं। गिनाने के लिए और बीसियों बातें हैं। मगर Secularism की सारी डिबेट में सबसे बड़ा ढकोसला पता क्या है। आप जिस Secularism के पक्षधर हो। व्यावहारिक ज़िंदगी में आप उसी के सबसे बड़े दुश्मन हो। आप कट्टरता के विरोधी तो हो, मगर जानते ही नहीं कि कट्टरता है क्या? उसका सबसे बड़ा गुनहगार कौन है?

जो भी इंसान या कौम ये कहता है कि उसके जाने सच के अलावा, उसके धर्म में बताए सच के अलावा दूसरा और कोई सच नहीं वो कट्टर है। हो सकता है कि किसी ने एक धार्मिक किताब में जीवन का अंतिम सच देख लिया हो तो ये भी संभव है कि दूसरा कोई वर्ग एक नेता को अपना अंतिम सच मानता हो। अगर नेता की हर बात को अंतिम सच मानने वाला अंधभक्त है तो खुद से पूछिए आपके और उसके अंधेपन में क्या फर्क है। बस चॉइस का फर्क है। अंधापन तो सेम ही है। सवाल यही है कि जिस वक्त आप अपने जाने सच को ही जीवन इकलौता सच मानने लगते हैं तो आप कट्टर हो जाते हैं। दकियानूसी हो जाते हैं। सड़ने लगते हैं। दूसरों से कटने लगते हैं। श्रेष्ठता बोध पाल लेते हैं। फिर चाहे वो एक किताब का सच हो या एक राजनेता का बताया सच। आपको उसके अलावा सच का दूसरा कोई वर्ज़न दिखाई नहीं देता।

अगर आप सच में समाज में फैली कट्टरता से चिंतित हैं तो ये पता लगाइए कि वो कौन है जो धार्मिक श्रेष्ठता की इस ग्रंथी से ग्रसित है। कट्टरता की सारी बहस इसी ग्रंथी में छिपी है। आप उसे खोल लीजिए सारे राज खुद-ब ख-द खुल जाएंगे। वरना आंकड़ों की बाज़ीगरी करते हुए दूसरों के कुकर्मों पर वैसे ही गंदे पोछे लगाते रहेंगे जैसे आज तक लगाते रहे हैं।

स्त्री की मुक्ति किसी भी हाल में संभव नहीं, गीताश्री लेकर आई हैं ‘क़ैद बाहर’

▪ आधी आबादी डेस्क

‘क़ैद बाहर’ राजकमल पेपरबैक्स से प्रकाशित गीताश्री का नवीनतम उपन्यास है, जो अपनी कथानक की वजह से इन दिनों चर्चा में है। इसका आवरण चित्र अनुप्रिया द्वारा खींचा गया है। उपन्यास का कवर देखकर ही उपन्यास को पढ़ने की जिज्ञासा छटपटा उठती है। उपन्यास में प्रेम और विवाह को लेकर जो द्वंद्व है उसे केंद्र में रखते हुए पांच अलग-अलग वर्ग, अलग-अलग उम्र और अलग दुनिया की स्त्रियों की कथा कही गई है। हर स्त्री की अपनी कहानी है। पांचों किसी न किसी रूप में एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। प्रेम में हारी हुई स्त्री विवाह के कैदखाने में जाकर खत्म हो जाती है। मध्यवर्गीय अधिकतर स्त्रियों के लिए विवाह एक ऐसा फंदा है जिसमें से रिहाई आसान नहीं होती। कई बार प्रेम भी छलिया साबित होता है। स्त्री की मुक्ति किसी भी हाल में संभव नहीं। दोनों मिल कर उसकी अस्मिता छीनना चाहते हैं। लेखक धीरेन्द्र अस्थाना के मुताबिक- “गीताश्री के अंदर एक तूफान है। यह तूफान उनके हाव-भाव, आचरण, बातचीत और लेखन में अपना पता देता रहता है। इस तूफान का एकमात्र कथ्य है स्त्री जीवन और उसकी ख्वाहिशों पर चारों दिशाओं से गिरता बहुकोणीय आपदाओं का निरंतर झरते रहना। यह उपन्यास इस तूफान की रचनात्मक परिणति का अनसुलझा समीकरण है। इस उपन्यास में प्रवेश करने से पहले हम इसकी नायिका माया का मर्म समझते हैं, ‘वह अपने आसपास सिर्फ भुक्तभोगी स्त्रियों से घिर गयी है। एक अलग मुल्क बन रहा है, जहां स्त्रियां ही स्त्रियां विचरण कर रही हैं। क्या उसके आसपास कोई लेडीज़ आईलैंड बन रहा है?‘ माया को आप ऐसा सूर्य समझें जिसके चारों ओर अनेक पृथ्वी चक्कर लगा रही हैं। ये सब पृथ्वियां उन टूटी फूटी स्त्रियों की प्रतीक हैं, जो पुरुषों द्वारा तोड़ दी गई हैं, छोड़ दी गई हैं, रौंद दी गई हैं। एक अकेली माया है जो अपनी टूटन के बावजूद दिल्ली-मुंबई-गोवा की ढेर सारी लड़कियों-औरतों की लड़ाई

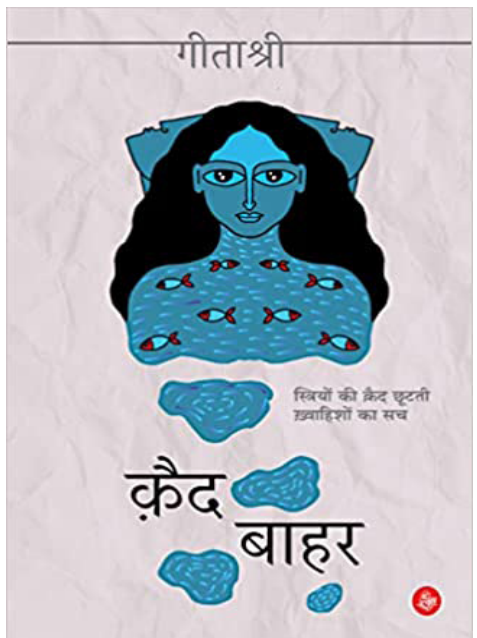

में खुद को झोंके हुए है। वह स्वीकार करती है, ‘मुझे फिर से प्रेम नहीं हुआ किसी से। रातों रात पुरुष किसी स्त्री के प्रेम से कैसे ऊब जाते हैं, कैसे उसे फंदा समझ कर निकल जाते हैं?’

“मोटे तौर पर लग सकता है कि यह उपन्यास विवाह संस्था को एक दबंग गाली है और पुरुष अहम को लात मारती है, लेकिन दरअसल यह उपन्यास की ऊपरी परत है। भीतरी परतों में एक संयत और विवेकी विमर्श भी मौजूद है, ‘तुम प्रेम से मिलने वाली पीड़ा से डरती हो, छोड़ दिये जाने के अपमान से डरती हो, इसीलिए प्रेम नहीं करती हो। सारे पुरुष एक जैसे नहीं होते मायू, स्त्रियों ने भी छोड़ा है पुरुषों को। जमाने भर के झंझटों को सुलझाती माया के सामने जब अपने आइडियल, अपने सुखी समझदार मां-पिता का त्रास उजागर होता है, तो वह निस्तब्ध रह जाती है। उसे समझ नहीं आता कि वह दोनों में से किसी एक के साथ कैसे खड़ी हो सकती है और यह लो, यही तो कुंजी है इस उपन्यास के समीकरण को हल करने की। यही है क़ैद बाहर।

प्रबंध संपादक: दिनेश के सिंह ❁ संपादक: हीरेन्द्र झा-निमिषा दीक्षित ❁ सलाहकार संपादक: चारुल मल्लिक, राजेश शर्मा, गीता सिंह ❁ डिज़ाइनर: मो. हसमतुल्लाह अंसारी

RNI-DELHIN/2013/51353